भारतीय दर्शन

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

भारतीय दर्शन

बी.ए. द्वितीय वर्ष

प्रथम प्रश्नपत्र

लेखक

डॉ.प्रदीप कुमार खरे
प्राध्यापक
दर्शन शास्त्र विभाग
सरोजिनी नायडू शा.स्नातकोत्तर कन्या
महाविद्यालय, भोपाल

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शाक्य
प्राध्यापक
दर्शन शास्त्र विभाग
शासकीय हमीदिया कला एवं
वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

© मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

❑ प्रादेशिक भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थों और साहित्य के निर्माण के लिए भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा) की केन्द्र प्रवर्तित योजनान्तर्गत, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल द्वारा प्रकाशित।

प्रकाशक : मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा,
भोपाल - 462 003 (म.प्र.)
दूरभाष - 0755-2553084, 2762123
E-mail : mphga1970@gmail.com

संस्करण : प्रथम, 2019

मूल्य : ₹ 100.00 (एक सौ रुपये) मात्र

कंपोजिंग : अक्षर ग्राफिक्स, भोपाल, मो.- 9425409321

मुद्रक : आर्यन प्रिन्टर, 35, जेल रोड, जहांगीराबाद, भोपाल
मो.: 0755-2673625, 9826287003

विषय-सूची

अध्याय का नाम	पृष्ठ क्र.
अध्याय प्रथम भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषताएँ वैदिक एवं अवैदिक परम्परा चार्वाक दर्शन-भौतिकवाद, ज्ञानमीमांसा	1 - 29
अध्याय द्वितीय जैन दर्शन - स्याद्वाद, अनेकान्तवाद, जीव-अजीव, बंधन एवं मोक्ष बौद्ध दर्शन - चार आर्यसत्य, क्षणिकवाद, अनात्मवाद	30 - 67
अध्याय तृतीय 1. न्याय दर्शन-ज्ञान मीमांसा, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द 2. वैशेषिक दर्शन - सप्त पदार्थ - परमाणुवाद	68 - 89
अध्याय चतुर्थ 1. सांख्य दर्शन - सत्कार्यवाद, प्रकृति एवं पुरूष, विकासवाद का सिद्धां 2. योग दर्शन - अष्टांग योग, ईश्वर, योग का महत्व ।	90 - 110
अध्याय पंचम 1. अद्वैत वैदान्त - शंकराचार्य - ब्रह्म, जीव, जगत, माया एवं मोक्ष। 2. विशिष्टाद्वैत - रामानुज - ब्रह्म, जीव, जगत, मोक्ष, मायावाद का ख	111 - 136

अध्याय प्रथम

भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषताएँ
वैदिक एवं अवैदिक परम्परा
चार्वाक दर्शन-भौतिकवाद, ज्ञानमीमांसा

भारतीय दर्शन में मनुष्य के जीवन के आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश रहा है। इसमें प्रयुक्त दर्शन शब्द का अर्थ है 'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्' जिसके द्वारा वस्तु का सत्यभूत तात्विक स्वरूप देखा जाये अर्थात् हम कौन हैं? कहाँ से आये हैं? इस जगत का वास्तविक स्वरूप क्या है? इसकी उत्पत्ति कैसे हुई, इसकी सृष्टि का कौन कारण है, यह चेतन है या अचेत? इन प्रश्नों का उत्तर देना दर्शन का प्रधान ध्येय है।

दर्शन शब्द दृश धातु से करण अर्थ में ल्यूट प्रत्यय से मिलकर बना है, इसका अर्थ है 'जिसके द्वारा देखा जाये'। 'शास्त्र' किसी भी विषय के क्रमबद्ध अध्ययन को कहते हैं। देखने का तात्पर्य केवल चक्षु इंद्रिय से देखना ही नहीं है, बल्कि दिव्यचक्षु, ज्ञान चक्षु के अर्थ में भी दर्शन शब्द का अर्थ प्रयुक्त हुआ है। गीता में भी विश्व रूप को देखने के लिए भगवान कृष्ण ने अर्जुन को दिव्य चक्षु ही दिया था। इस प्रकार दर्शन के लिए दोनों प्रकार के चक्षुओं की आवश्यकता होती है। स्थूल पदार्थ को स्थूल नेत्र से तथा सूक्ष्य पदार्थों को सूक्ष्म नेत्र से हम देखते हैं, यही कारण है कि उपनिषदों में भी 'दृश' धातु का ही प्रयोग किया गया है और यही भाव 'भारतीय दर्शन' के दर्शन शब्द में भी है।

भारतीय दर्शन का चरम लक्ष्य मोक्ष या कैवल्य की प्राप्ति है। भारत में दर्शन का उदय केवल ज्ञान प्राप्ति के लिए नहीं अपितु मनुष्य के परम पुरूषार्थ मोक्ष को प्राप्त करना है। मोक्ष की प्राप्ति आत्मज्ञान, आत्म साक्षात्कार से ही हो सकती है। इस दृष्टि से भारतीय दर्शन का अर्थ आत्म साक्षात्कार है। आत्म साक्षात्कार होने पर जीवन के जन्म मरण का बंधन समाप्त हो जाता है, यही जीव का परम लक्ष्य है। यही भारतीय दर्शन शास्त्र का परमतत्व है।

भारतीय दर्शन तथा जीवन का परस्पर अत्यंत प्रगाढ़ संबंध है। ये दोनों एक ही लक्ष्य सामने रखकर एक ही मार्ग पर गमन करने वाले दो पथिक हैं। इन दोनों का अस्तित्व एक ही कारण पर निर्भर करता है, उस तत्व का सैद्धांतिक रूप हमें दर्शन में मिलता है किंतु व्यावहारिक रूप जीवन में मिलता है। ये दोनों ही मिलकर परम तत्व का पूर्ण अनुभव कराते हैं। जन्म मरण के बंधन से मुक्ति तो सभी दर्शनों का परम लक्ष्य है। इस प्रकार